SEMINAR ON FINLAND EDUCATION MODEL & CREATIVITY IN EDUCATION

23.12.2016

स्त्रोत विशेषज्ञ :–

1. Herambh Kulkarni, Head ICT Development and Strategy CCE Finland.
2. Shirin Kulkarni, Experienced Trainer and Research Director, CCE Finland.
3. Mr. N. Raghu Raman, Journalist, Columnist and Author.

कार्यक्रम का शुभारम्भ सरस्वती पूजन से किया गया। शिक्षा मंत्री माननीय श्री केदार कश्यप जी, बोर्ड सचिव, ओपन स्कूल सचिव व एस.सी.ई.आर.टी. संचालक श्री सुधीर अग्रवाल जी, संचालक डी.पी.आई. श्री एल.एस. मरावी, संचालक एस.एस.ए.व आर.एम.एस.ए. के एम.डी. श्री अब्दुल कैसर हक जी, श्री हेरम्ब कुलकर्णी जी, श्रीमती शीरीन कुलकर्णी आदि ने दीप प्रज्जवलित किया। इसके पश्चात् स्वागत श्रृंखला में एस.सी.ई.आर.टी. संचालक सुधीर अग्रवाल जी ने शिक्षा मंत्री जी का स्वागत पुष्पगुच्छ देकर किया अन्य सभी सम्माननीय अधिकारी एवं आमंत्रित स्त्रोत पुरूष का भी स्वागत पुष्पगुच्छ देकर किया गया।

संचालक, एस.सी.ई.आर.टी. माननीय सुधीर अग्रवाल जी द्वारा कार्यक्रम की रूपरेखा, सी.सी.ई. एवं फनलैण्ड और भारत की शिक्षा व्यवस्था के अंतर पर प्रकाश डाला गया। उनका कहना था कि भारत में हम फिनलैण्ड की तर्ज पर किस प्रकार आने वाले समय में शिक्षा की अच्छी पद्धति पर कार्य करेंगे। संचालक महोदय ने यह भी कहा कि अब आने वाले समय में एस.सी.ई.आर.टी., एस.एस.ए., आर.एम.एस.ए. की ट्रेनिंग अलग–अलग नहीं होगी वरन् सभी साथ मिलकर ग्रुप में कार्य करेंगे। यही बात दिनांक 22.12.2016 को सचिव भारत सरकार ने एस.सी.ई.आर.टी. छत्तीसगढ़ के एडुसेट के कार्यक्रम में अपने उद्बोधन में कहा था।

इसके पश्चात मंत्री जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि फिनलैण्ड में छात्रों को कुछ विषय स्वयं सीखने के लिए छोड़ा जाता है ताकि युवा मन में विषय के प्रति रूचि जागृत हो सके। उनका कहना था कि शिक्षक को एक फेसीलिटेटर या मददगार बनकर काम करना होगा। उन्होंने बताया कि मात्र 55 लाख की जनसंख्या वाला फिनलैण्ड दुनिया में बेहतरीन शिक्षा के लिए जाना जाता है। वहां की शिक्षा का उद्देश्य है– भावी पीढ़ी को कैसे तैयार किया जावे? वहां भाषा सीखने पर ज्यादा जोर दिया जाता है, लिखने पर कम, क्योंकि लिखाई विषय को बोझिल बना देती है। उनका कहना था कि फिनलैण्ड में शिक्षक बच्चों के साथ उनके अभिभावकों की तरह व्यवहार कर रहे थे। वहां बच्चों के विषय का कॉन्सेप्ट एकदम क्लीयर था, ऐसा लग रहा था कि क्लास के बच्चे हम सभी को पढ़ा लेंगे।

उन्होंने आज इस सेमीनार में उपस्थित छ. ग. के सभी जिला शिक्षा अधिकारी, प्राचार्यों एवं शिक्षकों से आहवान किया कि वे फिनलैण्ड की इस चर्चा के आधार पर यहां की शिक्षा को बेहतर बनायें व शिक्षा को मॉडल के रूप में प्रस्तुत करें। हमारे प्राचार्य, शिक्षक एवं अन्य भी यह बतायें कि हमारी शिक्षा व्यवस्था में हमने क्या बेहतर किया है। हमारे बहुत से प्राचार्य एवं शिक्षकों ने भी शतप्रतिशत रिजल्ट एवं छात्रों की उपस्थिति पर कार्य किया है। उनका कहना था कि दंतेवाड़ा, बीजापुर व सुकमा अब शिक्षा के नाम से जाने जाते हैं, इसमें शिक्षकों की मेहनत काबिले तारीफ है। अपनी शिक्षा व्यवस्था में समुदाय एवं पालक को भी जोड़ने एवं बच्चों के लिए प्रेरणा स्त्रोत बनने जैसे मुददों पर विचार करने के लिए प्रेरित किया तथा सभी को शुभकामना देते हुए अपने उद्बोधन को समाप्त किया। परिषद् से श्री आलोक शर्मा ने मंत्रीजी का आभार व्यक्त किया।

फिनलैंड से आए श्री हेरम्ब कुलकर्णी जी ने बीच–बीच में रोचक गतिविधयां कराते हुए निम्नांकित बिन्दुओं पर अपनी बात विस्तार से रखी और कहा कि –

- हम सीखने आए हैं, सिखाने नहीं। हम यहां इसलिए हैं कि एक दूसरे से सीख सकें।
- हम शिक्षा के क्षेत्र में चर्चा करके समस्या समाधान के बारे में विचार करेंगे।
- बच्चों को अच्छी शिक्षा कैसे प्राप्त हो सकती है? इस पर विचार कर सकें।
- फिनलैंड में 99 प्रतिशत शासकीय शाला व 1 प्रतिशत निजी शाला है तथा दोनों में करीकूलम एक समान होता है, शिक्षक अपने तरीके से पढ़ाते है।
- हफ्ते में 20 घण्टे प्राथमिक विद्यालय के बच्चों की क्लास लगायी जाती है जबकि उच्च प्राथमिक की कक्षा के लिए 24 घण्टे का समय दिया जाता है। वहां शिक्षक आठ बजे स्कूल आते हैं और चार बजे चले जाते हैं। वे 4 घंटे बच्चों को सिखाते हैं तथा शेष 4 घंटे अपना पाठ योजना बनाते हैं।
- प्रति सप्ताह सोमवार से शुक्रवार तक 5 दिन स्कूल लगता हैं और एक पिरियड 45 मिनट का होता है, उसके बाद ब्रेक होता है।
- शिक्षक एक बार जिस तरीके से सीखाते है, उसे दूसरी बार बदल कर सीखाते है। फिनलैण्ड में शिक्षक एक शोधकर्ता की भांति होता है। फिनलैण्ड में सभी स्कूल बेस्ट स्कूल हैं।
- वहां सीनियर व उच्च शिक्षित शिक्षक ही प्रायमरी के बच्चों को पढ़ाते हैं तथा शिक्षकों से केवल शिक्षकीय कार्य ही कराया जाता है। शिक्षकों के वेतन के सवाल पर उनका कहना था कि वहां के शिक्षकों को उस देश के औसत स्तर से कम वेतन मिलता है जबकि भारत के शिक्षकों को यहां के औसत से अधिक वेतन मिलता है। किन्तु फिनलैंड में शिक्षकीय पेशा को पर्याप्त स्वायत्तता व सम्मान मिला है, यही कारण है कि वहां के विश्वविद्यालयों के सर्वोच्च 10 प्रतिशत शिक्षकीय पेशा में आते हैं। उनका कहना था कि इस पर हमें स्वमूल्यांकन करना होगा और स्वयं को बदलना होगा।
- वहां एक व्यक्ति परीक्षा नहीं देता पूरी टीम परीक्षा देती है। इक्वीटी (समता) पर ज्यादा जोर है। वहां वैसे तो फार्मेटिव असेसमेंट हमेशा चलता रहता है किन्तु लिखित परीक्षा या समेटिव असेसमेंट 12 वीं कक्षा में ही एक बार होता है। वहां के मैट्रिकुलेशन की इस परीक्षा में आदर्श सवाल होते है।
- निबंध के शीर्षक के नमूने से उन्होंने देशों की परीक्षा प्रणाली के बारे में बताया। वहां के निबंध का प्रश्न इस प्रकार का था– आपका कोई दोस्त या रिश्तेदार दूसरे देश से आपके शहर में रहने आ रहा है तो आप उसकी मदद किस प्रकार करेंगे? ताकि वह आपके शहर के अनुसार स्वयं को ढाल सके? प्रश्नों के इसी गहनता को ध्यान में रखते हुए वहां इतिहास एवं गणित के लिए परीक्षा का समय छः घण्टे का होता है और इसकी तैयारी के लिए तेरह रिफरेन्स किताबें होती है।
- अच्छे शिक्षक बनाने के लिए वहां पांच वर्षो तक टीचर्स ट्रेनिंग दी जाती है। सन् 2000 के बाद तकनीकी में भारी बदलाव आने के कारण सीखने–सीखाने का तरीका बदला है, ऐसी परिस्थिति में विद्यार्थियों की आवश्यकता के बारे में शिक्षक को पता होता है।
- श्री व श्रीमती कुलकर्णी द्वारा एक **लर्निंग कैफे** नामक रोचक खेल खिलाया गया। जिसमें 5–5 के दो समूहों को दो घेरे में आमने सामने खड़ा कराकर आपस में प्रश्नों के माध्यम से अपनी बात बारी–बारी से सभी के साथ रखनी थी।
- वहां स्कूलों में मीटिंग 10 मिनट की खड़े रहकर करतें हैं। इसका केवल इतना ही एजेण्डा रहता है कि मैंने अभी तक या कल सीखने–सीखाने में क्या किया? मैं कल या आज क्या नया करूंगा? और मुझे काम करने में क्या अड़चनें आ रही हैं? इसका रिजल्ट उन्हें 30 दिनों में पता चल जाता है। समान प्रकृति के विषय जैसे गणित, विज्ञान और भूगोल के शिक्षक एक साथ अपने तीनों विषय मिलाकर पढ़ाते हैं।

श्री एन रघुरमन ने एक प्रभावी शिक्षक बनने पर अपना प्रेरणास्पद उद्‌बोधन दिया। उन्होंने निम्नांकित बिन्दंओं पर प्रेरक चर्चा की–

1. फिनलैण्ड को आजादी नवम्बर 1917 में मिली और उन्होंने 1970 के बाद याने केवल 53 वर्ष बाद अपने शिक्षा क्षेत्र में आमूलचूल बदलाव किया। इसी तरह भारत को 15 अगस्त 1947 को आजादी मिली और उसने भी 53 वर्ष बाद सन् 2000 में एस.एस.ए. को लाकर शिक्षा के क्षेत्र में बदलाव के लिए प्रयास शुरू किया। इस प्रकार दोनों देशों में काफी समानता है और हमने यहां की परिस्थिति के अनुरूप जितनी प्रगति की है, वह कतई कम नहीं है।
2. उन्होंने ग्रीस का इतिहास बताते हए कहा कि वहां के एथेन्स में अंग्रेजी का जन्म हुआ। वहां लगभग सात सौ वर्षों तक एथेनियन्स की पीढ़ी रही जो लगातार विकास की प्रक्रिया को आगे बढ़ाते रहे। उसके बाद वीजिगो आये, जो कि पांच सौ वर्षों तक जीवित रहे और जिन्होंने पृथ्वी को नुकसान पहुँचाया, जिसे सुधारने में आगे लगभग 1000 वर्ष लग गए। उनका स्पष्ट कहना था कि हमें ध्यान रखना चाहिए कि हम पर एथेनियन्स हावी है या वीजिगो। यदि एथेनियन्स की ओर झुकाव है तो हम जो भी काम करेंगे वह आदर्श काम होगा।
3. एक शिक्षक कितना बदलाव ला सकता है, उस पर उन्होंने बहुत से अपने जिंदगी के उदाहरण देते हुए चर्चा की। उनकी लिखी 44 किताबों में से एक किताब **'' जिन्दगी की पाठशाला ''** अपने शिक्षक को भेंट करने के लिए लिखी थी। रघुरमन जी नागपुर (महाराष्ट्र) के सरस्वती विद्यालय में पढ़ते थे वहां के अपने शिक्षक को उन्होंने यह किताब सप्रेम भेंट किया था। उनका कहना था कि ''टीचिंग मात्र एक प्रोफेशन नहीं है वरन् इससे अनेक प्रोफेशन निकलते हैं'' जैसे – डाक्टर, इंजीनियर , आई.ए.एस. आई.पी.एस. आई.एफ.एस. आई.ई.एस., आई.आर.एस. आदि–आदि।
4. प्रभावी शिक्षक होने के लिए किसी भी शिक्षक में तकनीकी एवं व्यावहारिक हुनर होना आवश्यक है। उनका कहना था कि एक अच्छा शिक्षक वही है जिसमें अवलोकन, जिज्ञासा व अच्छी चीजों को कापी कर पाने संबंधी गुण हो।
5. बच्चे हमेशा शिक्षक के व्यवहार को अपनाते हैं उसके निर्देश को नहीं । इसलिए अपने व्यवहार को संयमित रखें और बच्चों से अपना संबंध बेहतर बनाए रखें। आपके उपदेश से नहीं वरन् आचरण में बदलाव लाने से पूरा समाज बदल सकता है।
6. हमारे पास तीन प्रकार के माइण्ड होते है, यथा पुवर माइण्ड – गॉशीप करने वाले, एवरेज माइण्ड –घटनाक्रम के बारे में बात करने वाले तथा ब्राइट माइण्ड– आइडिया देने वाले होते हैं। एक शिक्षक के रूप में इसका उपयोग कर हम अपने बच्चों की तकदीर बदल सकते हैं।
7. ऐसे ही तकदीर बदलने वाले शिक्षकों के रूप में उन्होंने तमिलनाडु की शिक्षक उमा और एक अन्य शिक्षक मेरी का उदाहरण दिया। उमा के प्रयास से एक भिखारी का काम करने वाला जेवियर आज अपने दम पर सर्वोच्च शिक्षा प्राप्त कर अपने शोध कार्य से इटली में बड़ी कंपनी में नौकरी कर रहा है। इसी तरह मेरी ने भी जान की मां की कमी को दूर कर एवं मां बन कर एहसास कराया और वही कभी फेल हो जाने वाला जान आज अमेरिका में बड़ा इंजीनियर के रूप में बड़ी कंपनी में नौकरी कर रहा है।

अंत में सभी का आभार प्रदर्शन, डा. वन्दना अग्रवाल के द्वारा ऑन बिहॉफ संचालक एस.सी.ई. आर.टी. द्वारा नोबल पुरस्कार विजेता स्पेनिश कवि पाब्लो नेरूदा की कविता '' you start dying slowly के हिन्दी अनुवाद से किया गया –

आप धीरे–धीरे मरने लगते हैं
अगर आप करते नहीं कोई यात्रा
अगर आप पढ़ते नहीं कोई किताॅब,
अगर आप सुनतें नहीं जीवन की घ्वनियाँ
अगर आप करते नहीं किसी की तारीफ
आप धीरे–धीर मरने लगते हैं
जब आप मार डालते हैं अपना स्वाभिमान
जब आप नहीं करने देते मदद अपनी,
न करते हैं मदद दूसरों की,
आप धीरे–धीरे मरने लगते हैं,
अगर आप बन जाते हैं गुलाम अपनी आदतों के,
चलते हैं, रोज उन्हीं रोज वाले रास्तों पे
अगर आप नहीं बदलतें हैं अपना दैनिक नियम व्यवहार
या आप नहीं बात करते उन्हें जो हैं,
अजनबी अनजान
आप धीरे–धीरे मरने लगते हैं,

State Council of Educational
Research & Training, Chhattisgarh
Shankar Nagar, Raipur (C.G.)

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्, छत्तीसगढ़,
शंकर नगर, रायपुर

Telephone-0771-2443596 Fax-0771-2443496 Website: www.scert.cg.gov.in Email: scertcg@gmail.com

Seminar on Finland Education Model & Creativitiy in Education and It's Applicability in Chhattisgarh

23 दिसम्बर 2016 (प्रातः 09.00 बजे से 05.00 तक)
कार्यक्रम स्थल– रायपुर ग्रीनस्, विसलिंग वुड के पीछे, छेरीखेड़ी, जी.ई. रोड.,रायपुर

परिषद् द्वारा Council for Creative Education (CCE), Finland के सहयोग से छत्तीसगढ़ के विद्यालयों प्रमुखों एवं शिक्षकों हेतु Finland Education Model पर दिनांक 23 दिसम्बर 2016 (प्रातः 09.00 बजे से 05.00 तक) को एक दिवसीय सेमीनार का आयोजन किया जा रहा है। Council for Creative Education (CCE), Finland एक शोध आधारित संस्था है जो मुख्य रूप से Creativitiy in Education & Pedagogy विषय पर कार्य करती है। राज्य में Finland Education Model पर उक्त सेमीनार के आयोजन के दौरान शिक्षा की गुणवत्ता की वृद्धि हेतु कार्य योजना का विकास किया जावेगा।

Finland Education Model & Creativitiy in Education पर आधारित कार्यक्रम से संबंधित विवरण–

1. **कार्यक्रम की तिथि** – 23 दिसम्बर 2016 (प्रातः 09.00 बजे से 05.00 तक)
2. **कार्यक्रम स्थल** – रायपुर ग्रीनस्, विसलिंग वुड के पीछे, छेरीखेड़ी, जी.ई. रोड.,रायपुर
3. **Objective** :
   a) Discussion on Finland Education Model and Creativitiy in Education
   b) रिाज्य में Finland Education Model पर उक्त सेमीनार के आयोजन के दौरान शिक्षा की गुणवत्ता की वृद्धि हेतु कार्य योजना का विकास ।
4. **कार्यशाला की विषयवस्तुः–**
   a. Finland Education Model .
   b. Creativitiy in Education.
   c. Finland Education Model and It's Applicability in Chhattisgarh
   d. Immediate Actionable Points for reform in school practices
5. **स्त्रोत व्यक्ति/विशेषज्ञ–**
   - Heramb Kulkarni, Head, ICT Development and Strategy, CCE Finland
   - Shirin Kulkarni, Experienced Trainer and Research Director, CCE Finland
6. **प्रतिभागीगण–**
   राज्य और जिले स्तर के अधिकारीगण, विभिन्न जिलो के प्रधान अध्यापक, चयनित विकासखण्ड शिक्षा अधिकारी/सहायक विकासखण्ड शिक्षा अधिकारी, चयनित संकुल समन्वयक, चयनित शिक्षक, शिक्षक प्रशिक्षक संस्थाओं के प्राचार्य एवं अकादमिक सदस्य।

Education in Finland

Education in Finland	
Ministry of Education and Culture	
Minister of Education and Science **Minister of Culture and Sport**	Sanni Grahn-Laasonen post currently vacant
National education budget (2009)	
Budget	€ 11.1 billion (2100 € per capita)
General details	
Primary languages	Finnish and Swedish
System type	National
Current system	since 1970s
Literacy (2000)	
Total	100%
Male	100%
Female	100%
Enrolment	
Total	n/a
Secondary	66.2% (graduating)
Post secondary	n/a
Attainment	
Secondary diploma	54% ac., 45% voc.
Post-secondary diploma	38% (of pop.)[1][2]
Secondary and tertiary education divided in academic and vocational systems	

Education in Finland is an education system with no tuition fees and with fully subsidized meals served to full-time students. The present education system in Finland consists of daycare programmes (for babies and toddlers) and a one-year "pre-school" (or kindergarten for six-year-olds); a nine-year compulsory basic comprehensive school (starting at age seven and ending at the age of sixteen); post-compulsory secondary general academic and vocational education; higher education (University and University of applied sciences); and adult (lifelong, continuing) education.

The Finnish strategy for achieving equality and excellence in education has been based on constructing a publicly funded comprehensive school system without selecting, tracking, or streaming students during their common basic education. Part of the strategy has been to spread the school network so that pupils have a school near their homes whenever possible or, if this is not feasible, e.g. in rural areas, to provide free transportation to more widely dispersed schools. Inclusive special education within the classroom and instructional efforts to minimize low achievement are also typical of Nordic educational systems.

After their nine-year basic education in a comprehensive school, students at the age of 16 may choose to continue their secondary education in either an academic track or a vocational track, both of which usually take three years and give a qualification to continue to tertiary education. Tertiary education is divided into university and polytechnic, also known as "university of applied sciences") systems. Universities award licentiate- and doctoral-level degrees. Formerly, only university graduates could obtain higher (postgraduate) degrees, however, since the implementation of the Bologna process, all bachelor's degree holders can now qualify for further academic studies. There are 17 universities and 27 universities of applied sciences in the country.

The Education Index, published with the UN's Human Development Index in 2008, based on data from 2006, lists Finland as 0.993, amongst the highest in the world, tied for first with Denmark, Australia and New Zealand. The Finnish Ministry of Education attributes its success to "the education system (uniform basic education for the whole age group), highly competent teachers, and the autonomy given to schools."

Finland has consistently ranked high in the PISA study, which compares national educational systems internationally, although in the recent years Finland has been displaced from the very top. In the 2012 study, Finland ranked sixth in reading, twelfth in mathematics and fifth in science, while back in the 2003 study Finland was first in both science and reading and second in mathematics. Finland's tertiary Education has moreover been ranked first by the World Economic Forum.

While celebrated for its overall success, Finland's gender gap on the 2012 PISA reading examinations was identified in a 2015 Brookings Institution report as the largest among participating nations. The performance of 15-year-old boys on that reading examination was not significantly different from OECD averages and 0.66 standard deviations behind that of girls the same age.

“Seminar on Creative Finland Education”

Participants' Profile for Seminar

Dec. 23, 2016

SN	Nature of Participants	Descriptions	Expected Numbers	Remark
1	Principals (Secondary Schools)	Attended MDP on Educational Leadership conduted in collaboration with IIM Raipur (05 days)	**123**	Participoants were selected across the state (01 from each Block)
2	Principals (Secondary Schools)	Attended MDP on Educational Leadership conduted in collaboration with IIM Calcutta (05 days)	**40**	Participoants were selected across the state
3	Principals (Secondary Schools)	Attended "School Leadership Course" conduted in collaboration with NCSL, NUEPA (10 days)	**100**	SRGs were selected across the state
4	DEOs/ Assistant Directors	01 DEO or 01 Assistant Director from each District	**28**	
5	BEOs/ABEOs	01 BEO and 01 ABEO from each District	**56**	
6	Teacher Educators from SCERT, CTE, IASE & DIETs/ BTIs	Principal (01) + Senior Faculty Member (01) + SCERT Faculty Members (8)	**50**	
7	Teachers		**28**	Selected Teachers of different levels (02 from each district)
8	State level Officials	Officials from RMSA, SSA, DPI, CG Board etc	**15**	
9	NGOs	UNICEF, APF, IFIG etc.	**10**	
Total			**450**	